[kp cuke fuo'k

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में खर्च एवं निवेश दोनो ही आम बातें है। प्रतिदिन की दिनाचार्यो में हम खर्च शब्द का प्रयोग निवेश शब्द से ज्यादा करते हैं जोकि हमें डराता है। क्योंकि कोई भी खर्च हमें सुख नहीं देता जबकि निवेश हमें हमेशा उत्साहवर्धन करता है। इसलिए हमें खर्च के स्थान पर निवेश शब्द का ज्यादा प्रयोग करना चाहिए।

खर्च शब्द विचार में आते ही हमारे मन में अनेक प्रकार के डरावने, चिन्ता देने वाले, परेशान करने वाले भययुक्त जैसे आदि प्रश्न आने लगते हैं। जिससे हमारी सकारात्मक कार्यप्रणाली में नकारात्मक प्रभाव बिना किसी कारण के आने लगते है। जबकि हम जीवन में कोई खर्च नहीं करते क्योंकि जो खर्च हम करते है वह कोई न कोई सुख पाने के लिए करते है। अर्थात कोई भी सुख पाने के लिए हम खर्च नहीं निवेश करते हैं। इसलिए आम भाषा में बिमारी का खर्च है, शादी का खर्च है, पढ़ाई का खर्च है, घर की रसोई का खर्च है आदि बातो से डर जाते है व चिन्तन की जगह चिन्ता में आ जाते है।

जबकि निवेश हमें सदैव खुशी देता है, चिन्तन देता है, सकारात्मकता देता है, जागरूकता देता है, उत्साह देता है। क्योंकि हमे जानते है कि जब हम कोई भी पैसा किसी काम के लिए निवेश करते है (आम भाषा में खर्च करते है) तो वह हमें पहले से ही आभास कराने लगता है कि जिस पैसे को हम निवेश कर रहे है वह हमें सुख देगा अर्थात हमारा धन बढ़ेगा, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, काम करने की क्षमता ज्यादा होगी, व्यवहार अच्छा होगा आदि क्योंकि हम जिसे खर्च मान कर चल रहे थे वह निवेश में बदल गया।

हम निवेश आम रूप से शेयर बाजार के लिए, व्यापार के लिए, एफ0डी0 के लिए, लाभकारी कामों के लिए करते है फिर भी जैसे ही निवेश के स्थान पर खर्च शब्द का प्रयोग करते है तो हमें तरह–तरह के डर बिना किसी कारण सताने लगते है। इसलिए हमें जीवन में कभी भी समय, शक्ति एवं धन को खर्च न कर सदैव निवेश करना चाहिए।

हम विश्व के उन सभी महान लोगो का इतिहास उठाकर देख सकते है जिन्होंने अपने तन–मन–धन का सदैव निवेश करके विश्व शक्ति पर राज किया एवं खर्च को अपनी शब्दावली/डिक्सनरी से सदैव–सदैव के लिए निकाल के रखा।

चिन्तक सत्यप्रकाश 'रेशू' का मानना है कि हमें भी अपनी डिक्सनरी से खर्च शब्द निकाल कर सदैव निवेश शब्द का प्रयोग करना चाहिए जो हमें चहुमुंखी ऊँचाईयाँ देता है एवं देश को आगे बढ़ाने में हमारी निवेश करने की भूमिका को बड़े स्थल पर अंकित कराता है।

विचारक सत्यप्रकाश 'रेशू' इससे पूर्व निम्न विषयों पर अपना चिन्तन देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, प्रदेश के मुख्यमंत्रीयों सहित अनेको प्रबुद्ध शक्तियों को भेज चुके हैं।

1. भारत में अब 95 प्रतिशत तक मतदान सम्भव।
2. कण्व आश्रम, कोटद्वार (उत्तराखण्ड) एक उपेक्षित स्थान जहां भारत का नाम 'भारत' पड़ा।
3. 30 प्रतिशत बिजली बचत, 30 प्रतिशत कम रोगी, 30 प्रतिशत ज्यादा काम।
4. गरीब नहीं, जरूरतमंद है हर कोई।
5. विश्व के तीन पंचमुखी शिवलिंगो में से एक सम्भलहेडा, जानसठ, जिला मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)
6. 97 प्रतिशत सकारात्मकता पर 3 प्रतिशत नकारात्मकता राज करती है।

सत्यप्रकाश 'रेशू' – 9837058160
रेशू चौक, रेशू विहार,
मुजफ्फरनगर–251001 (उ0प्र0)
Email : reshu.sprakash@gmail.com